एक प्रति का मूल्य 3/-

भार्गव समाचार दर्शिका

वर्ष 49 जून, 2020 अंक 3

तृतीय भाग - अंत्येष्टि संस्कार

ॐ 卐 ॐ 卐 ॐ

Over 50 Years Quality Healthcare

Cooper Pharma Limited

Rakesh Bhargava
Managing Director
09810348149

Lata Bhargava
Director
09910045970

Abhishek Bhargava
09958677899

cGMP, WHO-GMP & ISO 9001:2000 Certified

Regd. Office: 12/12, Shakti Nagar, Delhi - 110 007 (INDIA)
Tel.: (011) 26841442
Head Office: Plot no-5, Nidhi Plaza IInd floor, L.S.C., Gulabi Bagh, Shakti Nagar, Delhi - 52
Tel.: (011) 23653404, 23653537, 23653405
Works at : C-3, Industrial Area, Selaqui, Chakrata Road, Dehradun - 248197 (Uttarakhand)
Tel.: (0135) 2698730, 2698686
E-mail : cooperpharma@hotmail.com Visit us at : www.cooperpharma.com

IN MEMORY OF

LATE SHRI RAJ NARAIN BHARGAVA

J. NORAIN & SON
GASKETS & MATERIALS

Dealers of Asbestos Jointing Sheets
Aromatic Chemicals and Compounds

A-55/1, G.T. Karnal Road Indl. Area, Delhi-110033
Phone : 27428587, 47065521
E-mail : paras1966@hotmail.com
Mobile : 9810158418
Resi. : 011-27020222

Perfact Group
TOTAL ENVIRONMENTAL SOLUTIONS
CONSULTANCY WING
Environmental Clearances
Designing, Operation & Maintenance of Pollution Control Devices (APCS, ETP & STP)
Environmental Audit
Consultancy for Compliances of Environmental Laws
NBWL / Forest / Ground Water Clearances
ENVIRONMENT LABORATORY
Testing Laboratory
Air Quality
Water Quality
Soil Quality
Noise level
Indoor Air Quality
Work zone Monitoring
Metal Testing
WASTE MANAGEMENT
Electrical & Electronics Waste Management
Plastic Waste Management
Approved recycler of Plastic Waste under Plastic waste Rules 2016.
Solid Waste Management
Liquid waste Management
PERFACT GROUP
Total Environmental Solutions
5th Floor, NN Mall,
Sector - 3, Rohini, Delhi – 110 085
Phone : +91-11-49281360/61
Website : www.perfactgroup.com
Email : info@perfactgroup.in
POLYGAMMA RECYCLING LLP
Factory Address :
C-15, DSIIDC, Industrial Complex,
Nangloi, Rohtak, Road,
New Delhi – 110 041
Phone : +91-9818424364
Email : polygamma.recycling@gmail.com
PERFACT SOLUTIONS
Perfact Services
PolyGamma

Total No. of Pages 42 (including title).

卐 *सर्व भूतहिते रताः* 卐

भार्गव समाचार दर्शिका

संस्थापक : श्री नवीन चन्द्र भार्गव

वर्ष 49 | जून, 2020 | अंक 3

प्रबन्ध सम्पादक
श्रीमती नीरा भार्गव
मैसर्स कनु एस्टेट्स (प्रा.) लि.
दूरभाष : 9811066272

सम्पादक
श्री योगेश भार्गव
मैसर्स भृगु प्रिंटर्स
दूरभाष : 9312243182

भार्गव परिवारों में प्रचलित संस्कारों पर आधारित

'संस्कार पद्धति'

लेखकः योगेश भार्गव

तृतीय भाग - अंत्येष्टि संस्कार

कार्यालय व पत्र व्यवहार का पता
योगेश भार्गव, सम्पादक भार्गव समाचार दर्शिका
मानव धर्म भवन, 67/3, मद्रास हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मोबाइल : 9312243182 ई-मेल : bhargavasamachar@gmail.com

संरक्षक :

श्री सुरेश भार्गव
कनु एस्टेट्स (प्रा.) लि.
दूरभाष : 26344142

श्री अशोक भार्गव
एक्स. एल. लेबोरेट्रीज
दूरभाष : 25920680

श्रीमती मंजू भार्गव
दरियागंज, नई दिल्ली
मो. : 9312704470

श्री ए. एस. भार्गव
ग्रेक्योर फार्मेसियुटिकल्स लि.
दूरभाष : 25411594

श्रीमती मंजू भार्गव
नोएडा
मो. : 9310950999

श्री राकेश भार्गव
कूपर फार्मा, दिल्ली
दूरभाष : 23842587

संयोजक :

श्री संजीव भार्गव
घौंडा, मौजपुर
मो.: 9136229066

श्री देवेन्द्र कुमार भार्गव
किशोरी लाल एजेन्सीज़
मो. : 9871222158

श्री दिवाकर भार्गव
भार्गव कमर्शियल प्रा. लि.
मो. : 9810003713

सह सम्पादक :

श्री बाल कृष्ण भार्गव
राजौरी गार्डन
मो.: 9891910968

श्री मयंक भार्गव
घौंडा
मो.: 9718011810

श्रीमती मीनाक्षी भार्गव
डी.एल.एफ.
मो.: 8882954428

सदस्य :

श्री राजेश भार्गव
प्रशान्त विहार
मो.: 9810130726

श्री अजय भार्गव
पटपड़गंज
मो.: 9810380343

श्री सुधाकर भार्गव
आनन्द विहार
मो. : 9810042132

श्री सर्वेश भार्गव
दरियागंज
दूरभाष : 23265973

श्रीमती आरती भार्गव
रोहिणी
मो. : 9818884535

श्रीमती नीता भार्गव
कौशाम्बी
मो. : 9910288633

श्रीमती मनी भार्गव
आनन्द विहार
मो. : 9871793755

श्रीमती अनु भार्गव
घौंडा, मौजपुर
मो. : 9212944101

इस अंक में...

रंगीन विज्ञापन	3, 4, 41, 42
विज्ञापन	8
मरणकाल का ज्ञान होने पर	9
प्राण निकलने के पश्चात्	9
दाह कर्म	10
सामान की सूची	10
अर्थी	10
पिण्ड दान	13
पैर पूजना	14
क्रियाकर्म करके लौटते वक्त	16
अस्थि संचय	17
घट बाँधना	18
उठावनी	18
अस्थि विसर्जन	19
नौनहाना	19
दसवां या ग्यारहवां	19
दसवें पर दान का सामान	20
पूजन के लिए सामान	20
बारहवां या तेरहवीं	20
बारह ब्राह्मणों के लिए	21
शय्यादान के लिए सामान	21
भले-बुरे की रस्म	22
पगड़ी बाँधना	22
स्त्री द्वारा आँट खोलना	23
बरसी	24
बरसी पर सामान	24
विज्ञापन	25–38

In Memory of

Shri Nihal Chand Bhargava

Smt. Kanti Devi Bhargava

Shri Ramesh Chand Bhargava

Eyetec Opticians

200, KATRA BARYAN, FATEHPURI,
DELHI - 110 006 (INDIA)
Phone Off. : 011-23939670, 23919811

Eyetec Optics

211, SOUTHEX TOWER, 2nd FLOOR
389, MASJID MOTH, SOUTH EXTN. PART - 2
NEW DELHI-110049 (INDIA)

G-14, SOUTHEX PLAZA-I, NEAR MASJID MOTH,
NDSE-II, NEW DELHI-110049 (INDIA)
Phone : 011-26259670, 26259811
E-mail : eyetecoptics@hotmail.com

Smt. Sandhya Bhargava

Lokesh Bhargava **Neeraj Bhargava**

संस्कार पद्धति

(भार्गव समाज में प्रचलित संस्कारों के आधार पर)

मनुष्य-जीवन का अन्तिम संस्कार (अन्त्येष्टि)

मरणकाल का ज्ञान होने पर

1. उपस्थित जनों को भगवत् नाम-स्मरण करना चाहिए और यदि मरणासन्न में सुनने व बोलने की शक्ति है तो उससे भी कहलाना चाहिए। हमारे परिवार में 'श्री हरिगीता' का पाठ होता है।
2. तुलसीदल पीसकर गंगाजल में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलाना चाहिए, इससे साँस निकलने में शान्ति मिलती है।
3. गले में तुलसी की माला पहनानी चाहिये।
4. पास में तुलसी का पौधा रक्खें, इससे वहाँ की वायु शुद्ध हो जायेगी।
5. दिन हो या रात, घी का दीपक जलाकर रखना चाहिये।
6. मरणासन्न को पलंग से नीचे उतार कर लिटा दें तथा पैर दक्षिण दिशा की ओर होने चाहियें।
7. धरती शुद्ध करके (साफ करके गंगाजल व काले तिल, छिड़ककर कुशा बिछाकर) एक धुली सफेद चादर पर मरणासन्न को लिटा दें।
8. दान-पुण्य जो हो सके करवा देना चाहिए। (गाय को घास, अनाथों को द्रव्य, भूखे को भोजन आदि)

प्राण निकलने के पश्चात्

1. मरने के बाद मृतक की आँख या मुँह खुला हो, तो उसे बन्द कर दें। नाक रुई से बन्द कर देनी चाहिए।
2. मल-मूत्र हो गया हो, तो शुद्ध कर दें।

3. मुँह को चादर से ढक दें।
4. दोनों हाथ उसके बगल में सटा दें तथा पैर के अँगूठों को आपस में बाँध दें। नाभि पर नमक की पोटली रखने से शरीर में सड़न देर से होती है।
5. मृतक के चारों ओर काले तिल, सरसों/राई तथा हल्दी की रेखा खींच दें, चींटी वगैरह नहीं आयेंगी।
6. मृतक के सिरहाने तुलसी जी का पौधा रखना चाहिए और घी का दीपक पास में जलायें। धूप/अगरबत्ती जलायें।
7. जहाँ तक हो सके 'गीता' का पाठ या भजन करें या इनके कैसेट, सी.डी. लगा दें। इससे मृतक आत्मा को शान्ति मिलती है। 'श्री हरिगीता' का पाठ करते समय सम्पुट लगाते हैं।

''मेरा लगाता ध्यान कहता ॐ अक्षर ब्रह्म ही।
तन त्याग जाता जीव जो पाता परम गति है वही।।''

8. पंडित से पता करें कि मृत्यु पंचक में तो नहीं हुई। अगर पंचक हो, तो पांच पुतले बनाकर मृतक के पास चिता में रख दिये जाते हैं। यह पूजा पंडित करा देते हैं।
9. यदि दाहकर्म में 20 घण्टे से अधिक हों तो मृतक शरीर को बर्फ पर रख देना चाहिये। इष्ट मित्रों, सम्बन्धियों को सूचना देनी चाहिए।
10. मृत्यु की तिथि जिस दिन दाग लगा हो उसी दिन से माननी चाहिए (मृत्यु के दिन से नहीं)।

दाह कर्म

हर शहर में कई दुकानें ऐसी होती हैं जहाँ दाहकर्म का सभी सामान एक ही स्थान पर मिल जाता है।

सामान की सूची

1. कम से कम पाव भर फूल; 4-5 लड़ फूल मालाएँ, 10-12 पान।
2. इत्र की शीशी, चन्दन, कपूर, गुलाब जल की शीशी, थोड़ा शहद।

3. दूध, दही, शक्कर, घी, 500 ग्राम जौ का आटा (पिण्ड बनाने के लिये), 50 ग्राम काले तिल।
4. कपूर 50 ग्राम, हवन सामग्री 4-5 पैकेट, मखाने, गोले या नारियल पाँव पूजने के लिए, 2 जनेऊ (पुरुष मृतक के लिए), 100 ग्राम कलावा।
5. चन्दन की लकड़ी के 5-6 टुकड़े, तुलसी की लकड़ी, देशी घी (2 किलो का डिब्बा), शक्कर डेढ़ किलो, राल दो किलो।
6. मुख में रखने को पंचरत्न।
7. अगर मृतक सुहागिन स्त्री है, तो मेंहदी, सिन्दूर, तेल, कंघी, चूड़ा, नथ, बिन्दी, चुन्दड़ी।
8. मृतक के ऊपर डालने के लिए शाल।
9. पैर पूजने वाली जितनी स्त्रियाँ हों उतने नारियल लेने चाहिए। स्त्री की मृत्यु होने पर पैर पूजने के लिये साबुत गोले व रूमाल होते हैं। साथ में रुपये भी रखे जाते हैं।
10. यदि मृतक वृद्ध हो तो चाँदी-सोने के फूल व मखाने आदि भी होने चाहिए। वृद्ध मृतक के ऊपर पोते चंवर हिलाकर अपना सेवाभाव दर्शाते हैं।
11. दाह कर्म करने वाले के लिए पहनने की एक धोती, एक बनियान, डेढ़ मीटर अंगोछे के रूप में सफेद कपड़ा, पैरों में पहनने की चप्पल, जनेऊ, थाली और लोटा चाहिए।
12. मृतक का बड़ा पुत्र ही मुखाग्नि देता है और सभी कार्य करता है। यदि किसी कारणवश वह उपस्थित न हो, तो सबसे छोटा पुत्र या दोनों की अनुपस्थिति में कोई भी पुत्र या निकट सम्बन्धी क्रियाकर्म करता है।

अर्थी

1. 7 फुट लम्बे 2 बाँस तथा लगभग 3 फुट लम्बे 8-10 बाँस के टुकड़े।

2. अर्थी पर बिछाने के लिए पतवार तथा नया सफेद कपड़ा (सात-साढ़े सात मीटर कपड़ा ठीक रहता है) लाश के ऊपर व नीचे के लिए (दो-सवा दो मीटर नीचे, दो-सवा दो मीटर ऊपर, लगभग आधा मीटर सर बाँधने के लिए, डेढ़ मीटर कमर में बाँधने के लिए, डेढ़ मीटर कुरते के लिए)
3. अर्थी बाँधने के लिए दो गोले बान और कलावा। कलावा बान के साथ लपेटा जाता है। बाँधते समय फूलमाला की भी आवश्यकता होती है।
4. जो दो लम्बे बाँस लाये गये हैं, उनको किसी वस्तु (ईंट) आदि पर रखकर उसमें छोटे (3 फुट) वाले बाँस पर कलावा लिपटे बान से मजबूती से बाँधा जाये। सर के नीचे का बाँस का टुकड़ा फटा नहीं होना चाहिए।
5. एक घड़ा।

— सामान आ जाने पर क्रिया करने वाले की नाई द्वारा हजामत (शेव) बनवायी जाती है। इस कार्य में संकोच नहीं करना चाहिए क्योंकि यह मृतक के प्रति सम्मानसूचक प्रथा है और क्रिया करने वाले की पहचान भी।

— दाह कर्म करने वाला स्नान करे, स्वच्छ कपड़े पहन कर जनेऊ धारण करे।

— मृतक को स्नान करवायें। मिट्टी के एक घड़े में पानी भरकर बायें हाथ से लायें और मृतक को स्नान पैर की ओर से शुरु करके सिर तक करायें। मृतक अगर स्त्री है तो पुत्र ही स्नान कराये, परन्तु वस्त्र बहुयें या परिवार की स्त्रियाँ पहनायें।

— मृतक पुरुष का जनेऊ, यदि पहने हो तो पैर की ओर से उतारा जाये और नया जनेऊ जोड़ा गले से पहनाया जाये।

— पहने हुए कपड़े निकालकर नये कपड़े पहनाये जायें। माला, चन्दन,

इत्र लगाकर अर्थी पर लिटाया जाये। पैर दक्षिण दिशा की ओर होने चाहियें।

- सुहागिन स्त्री को लाल साड़ी, फूल माला पहना कर श्रृंगार करें। पति माँग में सिंदूर लगा दें। अर्थी पर मृतक को लिटाकर ऊपर से चुँदड़ी डाली जाये।
- यदि मृतक विधवा हो, तो माथे पर चन्दन, गले में फूल व तुलसीमाला, सफेद साड़ी पहनायें। उसे सजावें। अर्थी पर लिटाने के बाद सफेद कपड़ा डाला जाये और ऊपर से शाल डाला जाता है।
- यदि मृतक गर्भिणी हो, तो गर्भस्थ शिशु को डाक्टर द्वारा निकलवा देते हैं। बालक को अलग करके ही स्त्री का दाह कर्म किया जाता है। मृतक शिशु को शमशान में ही गड्ढे में 3-4 किलो नमक डालकर गाड़ देते हैं।
- यदि मृतक तीन वर्ष से कम उम्र का बालक है, तो उसे सफेद वस्त्र में लपेट कर और यदि कन्या हो तो उसे लाल वस्त्र में लपेट कर शमशान ले जाते हैं। गड्ढा खोदकर लगभग पांच किलो नमक डाल कर उसे लिटा देते हैं। लाश के ऊपर भी कुछ नमक डालते हैं। लिटाकर ऊपर से पत्थर रख देते हैं, ताकि कोई जानवर उसे खोद कर न निकाल सके।
- किशोर बालक के मरने पर पिण्डदान व अन्य सभी कार्य करने चाहिये। केवल मृतक के पिता के जीवित रहने पर सपिंडन नहीं होता।

पिण्ड दान

बाजार से आये जौ के आटे को थाली में रखकर उसमें काले तिल, दूध, घी, शक्कर, शहद, दही, मिलाकर पानी से गूँध कर उसके पाँच पिण्ड बना लिये जायें। पिण्ड फल के जितना बड़ा होना चाहिए। किसी पंडित द्वारा संकल्प मंत्र के साथ पिण्ड-दान करें। क्रिया करने वाला दक्षिण दिशा

की ओर मुँह कर बायाँ घुटना टेककर बैठ जाये और जनेऊ दाहिने कंधे पर रखकर (अर्थात् अपसव्य होकर) हाथ में कुछ पैसे, कुछ तिल, व जल लेकर पहले संकल्प करे।

पुत्र तथा निकट सम्बन्धी, जो कंधा देने वाले हों, अर्थी को उठाकर आँगन में रखें और सब लोग अर्थी की परिक्रमा करें। अब मृतक को अर्थी पर कफन ओढ़ाकर बान में कलावा मिलाकर उससे कसकर बाँधा जाये, फूलमाला व पान से सजाया जाये। वृद्ध मृतक के कान में नाती शंखनाद करते हैं, ऐसी हम हिन्दुओं में प्रथा है। इसका अर्थ यह है कि यदि संयोगवश शरीर के किसी अंग में प्राणवायु स्थिर रह गई है, तो वह कान में शंख की आवाज पहुँचने पर निकल जाये।

पैर पूजना

अर्थी पर मृतक को बाँधने के बाद तथा दो पिण्ड हो जाने के बाद बेटा, पोता, नाती, भांजे आदि पैर छूते हैं। पैर पूजन में मृतक पुरुष की स्त्री सबसे पहले लाल रंग के कपड़े के टुकड़ों के साथ रुपये-पैसे रखकर पैर पूजती है। मृतक की स्त्री की चूड़ियाँ व उसके बिछिये अर्थी में रख दिये जाते हैं। फिर घर की सब बहुएँ रुपये-पैसे व नारियल से पैर पूजती हैं। घर की अन्य बहुएँ, बेटे व अन्य लोग भी पैर पूजकर मृतक के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं। मृतक स्त्री के पैर कपड़े व गोले से पूजे जाते हैं। पैर पूजकर उल्टी परिक्रमा करते हैं (अर्थात् दाहिने से बायीं ओर)। वृद्ध मृतक के ऊपर पोते चंवर हिलाकर उसकी वायु से मक्खी-मच्छर आदि जीवों को हटा कर अपना सेवा-भाव दर्शाते हैं। मरने वाले के कपड़े क्रिया करने वाला या मृतक की विधवा स्त्री घर के दरवाजे के बाहर रख दे। भगवान का स्मरण कर मृतक की अर्थी को कंधा देने वाले पुनः उठाकर घर से बाहर ले जावें। यदि मृतक वृद्ध हो, तो चाँदी-सोने के फूल व मखाने तथा रेजगारी अर्थी के ऊपर से बिखेरते हैं। राह में पीपल के पेड़ के नीचे अर्थी रखकर विश्राम कराते हैं और निम्न मंत्र द्वारा तीसरा पिंड दें :-

अमुक गोत्रे अमुक प्रेत पथ निमित्तक विश्राम स्थाने एष पिंडों मयादीयते तवोप्रतिष्ठताम्।

एक घड़े में जल भरकर जल की एक धार छोड़ते हुए क्रिया करने वाला अर्थी की उल्टी एक परिक्रमा करे व घड़े को पैरों की तरफ ले जाकर फोड़ दें। इसके बाद शव की अर्थी को घर के वे ही चार लोग उठावेंगे जिन्होंने घर पर अर्थी को सर्वप्रथम कन्धा दिया था। केवल कंधा देने वाले आपस में बदल जाते हैं अर्थात् पीछे वाले आगे तथा आगे वाले पीछे जाकर अर्थी उठाते हैं। आजकल प्रायः अर्थी लाश ढोने वाली गाड़ी में शमशान घाट ले जाते हैं। यह ध्यान रखें कि इस समय सिरहाना आगे की ओर और पैर पीछे की ओर हों। शमशान घाट पर पहुँचने पर अर्थी को जमीन पर स्वच्छ स्थान पर रख दें और एक बार पुनः नदी के जल से स्नान करावें या यदि नदी आदि न हो तो गंगा जल के छींटे दें। लकड़ी से चिता बनावें। भगवान का स्मरण कर अर्थी के बंधन खोलकर मृतक को ऊपर नीचे वाले कपड़े समेत ही चिता पर लिटा दें। चिता पर मृतक को रखने के बाद सर्वप्रथम क्रिया करने वाला लकड़ी रखता है फिर अन्य लोग शव की चिता पर लकड़ी रखते हैं। चिता पर फिर अंतिम दो पिंड (दायें व बायें हाथ के पास) दिये जाते हैं।

यदि मृत्यु के समय पंचक हों, तो कुशा के पांच पुतले बनाकर मृतक के पास चिता में रख दिये जाते हैं। मृतक के शरीर के ऊपर घी में भिगोकर चन्दन के टुकड़े रखे जाते हैं। यदि तुलसी की सूखी लकड़ी हो, तो उसे भी रख दें। कपूर, धूप आदि भी रखते हैं, पाँचों पिंड इकट्ठे करके शव के दक्षिण कोख में रख देते हैं। क्रिया करने वाला फूस में कपूर रखकर उसे जला कर फूस को हाथ में लिये हुये चिता की उल्टी परिक्रमा करे जिससे कि परिक्रमा के समय शव के व दाग देने वाले के बीच में बायाँ हाथ रहे। फिर जलते कपूर द्वारा फूस सहित सर्वप्रथम मृतक के सिर की ओर से अग्नि दे। महाब्राह्मण यहाँ का सारा कार्य कराता है। चिता की अग्नि को

अच्छी तरह प्रज्वलित करने के लिए राल, शक्कर व घी डालते हैं। हवन सामग्री भी डाली जाती है, जिससे वातावरण शुद्ध हो जाये। जब महाब्राह्मण बतावे कि कपाल क्रिया के लिए मष्तिष्क पक गया है, तो एक बाँस को घी में भिगोकर उससे कपाल क्रिया की जाती है। घी की पाँच आहुतियाँ दी जाती हैं। शव की परिक्रमा करके महाब्राह्मण को सामर्थ्य अनुसार दक्षिणा दें। फूस आदि के पैसे भी दे दें। लाश जल जाने के बाद घर लौटना चाहिए। यदि इसी समय उठावनी का दिन व समय निश्चित कर लें तो अच्छा होगा। इससे सभी उपस्थित सज्जनों को इसकी सूचना उसी समय हो जाती है और अन्य लोगों तक भी उसकी सूचना उनके द्वारा हो जाती है।

उठावनी प्रायः तीसरे दिन होती है पर उस दिन मंगलवार या वृहस्पतिवार न पड़े।

क्रियाकर्म करके लौटते वक्त

- रास्ते में नहाने का प्रबन्ध हो तो नहाकर या हाथ-पैर धोकर सभी कुटुम्बीजन तिल की अँजली देते हैं।
- बायें हाथ की छोटी उँगली से नीम की पत्ती को चखकर थूक देते हैं।
- घर लौटकर आने तक घर की स्त्रियाँ नहाकर तिल की अँजली देती हैं, नीम की पत्ती चबाती हैं और फिर घर के आँगन में कुछ बिछाकर बैठी रहती हैं।
- भुने चने घर वाले खाते हैं।
- खाने का सामान आटा, दाल (उड़द की छिलके वाली), घी, नमक, मिर्च, दियासलाई, पत्तल, कुल्हड़ आदि सामान उतना ही लाया जाता है जो उस समय के लिए पर्याप्त हो। चौके में बने खाने में हल्दी नहीं पड़ती और न ही छौंक लगाया जाता है कढ़ाई भी नहीं चढ़ती। बचा खाना प्रयोग न करें। इस सब सामान की कीमत मृतक के ससुराल वाले या बेटे के ससुराल वाले देते हैं। जिस घर में मृत्यु

हुई हो उस घर की बहुएं भोजन न बनायें। कोई आयी हुई बेटी या अन्य कोई महिला बना दें। (**आजकल खाना हलवाई से आ जाता है जिसके पैसे मृतक के ससुराल वाले या बेटे के ससुराल वाले देते हैं।**)

- खाना बनाने के बाद चूल्हे पर तवा उल्टा रख देते हैं। बर्तन दूसरे दिन ही साफ करते हैं। शाम को घर में खाना नहीं बनता, कहीं बाहर से मंगा लें।
- चार रोटी और दाल से गौ-ग्रास दिया जाता है। कंधा देने वाले रिश्तेदार पहला ग्रास बायें हाथ से मुँह में रखकर थूक देते हैं। यह **कड़ुआ ग्रास** कहलाता है। फिर सब घर वाले भोजन करते हैं।
- कड़ुआ ग्रास प्रथम दिन, उठावनी के दिन, नौनहाने के दिन व द्वादशे वाले दिन ही होता है।
- प्रतिदिन पहले गौ-ग्रास देकर ही खाना खाया जाता है।
- मृतक की पत्नी तथा क्रिया-कर्म करने वाले को 12-13 दिन तक संयम से रहना चाहिए। रोज स्नान कर, किसी को बिना छुए, तख्त या जमीन पर सोना चाहिए।

अस्थि संचय

दाह कर्म करने के बाद उठावनी वाले दिन (दाह-संस्कार के तीसरे दिन) प्रातःकाल परिवार के पुरुष शमशान में अस्थि संचय (संग्रह) के लिए जाते हैं। सामान शमशान घाट पर मिल जाता है। बाजार से दही, कच्चा दूध, गंगाजल, एक व्यक्ति का भोजन, खोये की सफेद बरफी 250 ग्राम ले जाते हैं।

अस्थि संचय सिर की अस्थि को उठाकर दूध व गंगाजल से एक तसले में धोकर सफेद कपड़े की छोटी थैली में रखते हैं। बड़ी थैली में पहले छोटी थैली को रखकर फिर अन्य अस्थियाँ धोकर, पोंछकर भरते हैं। बची भस्म भरकर नदी या जल में डाल देते हैं। अस्थियाँ घर नहीं लायी जातीं। मंदिर के सुरक्षित स्थान पर रख देते हैं। (**दिल्ली में अस्थियां रखने के लिये**

बगीची व निगम बोध घाट में स्थान है। यह बगीची मरघट वाले हनुमान मंदिर, जमुना बाजार पर स्थित है।)

स्नान कर घर लौटें, गऊ ग्रास देने के बाद ही भोजन करें। तेरहवीं से पहले किसी भी दिन जाकर गंगाजी में उन अस्थियों का विसर्जन कर देना चाहिए।

घट बाँधना

किसी कुएँ के पास पीपल के पेड़ में एक हाँडी में जल, फूल व चन्दन डाल कर बाँध देते हैं। हाँडी में एक छेद किया होता है जिसमें सूत डाल देते हैं, जिससे हाँडी से पानी एक-एक बूँद टपकता है। एक दीपक भी जला दिया जाता है। इसे **'घट बाँधना'** कहते हैं। दसवें के रोज तक प्रतिदिन इस हाँडी में पानी भरा जाता है। घट को पानी से पुनः भर देते हैं। **दिल्ली में बगीची में भी घट बांधा जाता है।**

उठावनी

1. मृत्यु के बाद, तीसरे दिन शाम को चार बजे के लगभग नातेदार, बिरादरी व जान-पहचान वाले एकत्र होते हैं। भजन आदि करें और मृतक को श्रद्धांजलि दें। इसी दिन बाहर वालों को सूचना-पत्र (चिट्ठी) लिखते हैं, जिसमें मरने की सूचना व तेरहवीं की तिथि लिखी जाती है।
2. तीसरे दिन मंगल या बृहस्पतिवार होने पर उस दिन उठावनी नहीं की जाती है, एक दिन पहले कर लेते हैं।
3. एक लोटे में पानी भरकर नाई या कोई नौकर लाता है। सर्वप्रथम क्रिया करने वाला बायें हाथ की छोटी उंगली से जरा-सा पानी आँख में छुआता है और लोटे में पैसे डालता है। इसे **'आँख ठंडी करना'** कहते हैं। सभी निकट सम्बन्धी व घर की स्त्रियाँ भी आँख ठंडी करती हैं।

4. मृतक आत्मा की शान्ति-कामना करने सभी मंदिर में भगवान के दर्शन के लिए जाते हैं।
5. मंदिर से लौटते समय हरे पत्ते वाला साग खरीद कर रसोई में रख देते हैं। बाद में इसे गाय को खिला दिया जाता है।
6. उठावनी के बाद चौथे दिन से घर की रसोई में साग आदि बन सकता है। लेकिन छौंक नहीं लगता, न ही कढ़ाई चढ़ती है।
9. यदि गरुड़ पुराण या गीता का पाठ करना हो, तो इसी दिन से शुरू करते हैं। बारहवां या तेरहवीं पर उसकी समाप्ति होती है।

अस्थि विसर्जन

अस्थि का प्रायः गंगा जी में विसर्जन किया जाता है। पुत्र, निकट संबंधी गंगाजी जाकर अस्थि की थैली को गंगाजी की मध्य धारा में विसर्जन कर दें। यह कार्य उठावनी के बाद कर देना चाहिए। विसर्जन के बाद वहीं पर ब्राह्मण को भोजन कराकर उसको दक्षिणा देनी चाहिए।

नौनहाना

1. घर के पुरुष बाल बनवाकर नहाते हैं।
2. नीम की पत्ती चबाकर घर वापस लौटते हैं।
3. नौनहाने के दिन या उससे पहले प्रातःकाल घर की बहन-बेटियाँ **'आँट मीट'** खोलती हैं। सिर से नहाकर शृंगार (काजल, बिन्दी, माँग भरना आदि) करती हैं व मंदिर जा कर कुछ खाकर वापस आती हैं।
4. इस दिन दाल चावल बनते हैं तथा चावल की आँट खुल जाती है।

दसवां या ग्यारहवां

— कुछ लोग दसवें दिन यह कार्य करते हैं और कुछ ग्यारहवें दिन। **(आजकल नौनहाने वाले दिन ही यह कार्य हो जाता है।)**

— महाब्राह्मण द्वारा सपिंडी का कार्य करवाया जाता है।

दसवें पर दान का सामान

- ज्यादातर पुराना सामान लेकिन अच्छी अवस्था वाला—चारपाई, दरी या गद्दा, चादर, तकिया, ओढ़ने की चादर या रजाई (पुरानी या नई)।
- थाली, लोटा, गिलास, कटोरी, चम्मच।
- छतरी, लकड़ी की छड़ी, चप्पल या खड़ाऊँ, लैम्प (टार्च)।
- शीशा, कंघा, चन्दन माला, आसन, तेल।
- अन्न और गऊ दान के निमित्त कुछ धन।
- यदि मृतक स्त्री हो तो 'सुहाग पिटारी' इसमें चूड़ी, मेंहदी, बिन्दी, बिछिया, कलावा होता है।
- कुछ फल मिठाई महाब्राह्मण को सामर्थ्यानुसार दक्षिणा के साथ दे दें।
- **दिल्ली में नौनहाना व दसवां बगीची में भी होता है। महाब्राह्मण पुराना सामान लेने से कतराता है। इसलिये बहुत से लोग नया सामान ही देते हैं।**

पूजन के लिए सामान

जौ का आटा ढाई किलो, ढाक के पत्ते, दोने, दूध, दही, शहद, गंगाजल, रूई जिसमें 360 बत्ती बने, कड़वा तेल और पान। (**यह सामान बगीची में ही मिल जाता है।**)

बारहवां या तेरहवीं

- पुरुष की तेरहवीं कुछ लोग बारह दिन की करते हैं और कुछ तेरहवें दिन।
- स्त्री की तेरहवीं बारह दिन की होनी चाहिये।
- गरुड़ पुराण या गीता का पाठ इसी दिन समाप्त कर देना चाहिये।
- इस दिन प्रातः पंडित द्वारा सपिंडी-कृत कर्म कराया जाता है। (कार्य के लिए सामान पंडित से पूछकर ही मंगवाया जाता है)।

- प्रातः हवन कर शुद्धि की जाती है।
- इसी दिन षोडशी श्राद्ध भी कर देना चाहिए क्योंकि हर माह के श्राद्ध करने की सुविधा न रही, तो दिक्कत होती है।
- 12 ब्राह्मणों को भोजन कराया जाये।
- भोजन में हल्दी नहीं डाली जाती है। बेसन की बनी कोई भी वस्तु पंडितों को नहीं परोसी जाती है।
- ब्राह्मणों द्वारा भोजन के बाद ही घर वाले भोजन करते हैं।
- यदि मृतक स्त्री है, तो 12 ब्राह्मणों के अतिरिक्त 9 ब्राह्मणियों को भोजन करायें। यदि मृतक स्त्री हो तो इसमें से एक ब्राह्मणी को शय्यादान का सारा समान दिया जायेगा। वही ब्राह्मणी हर माह श्राद्ध पर भोजन करने आये व बरसी पर भी दान का समान इसी ब्राह्मणी को दिया जायेगा व भोजन कराया जायेगा।
- अपने निकट संबन्धियों, निकट परिजन आदि को तेरहवीं के दिन बुलाना चाहिए। सभी उपस्थित व्यक्ति व संबन्धी प्रसादस्वरूप भोजन पाते हैं।

बारह ब्राह्मणों के लिए

12 गिलास, 12 सफेद रूमाल, 12 फल, 12 पेड़े, 12 सुपारी, 12 कमलगट्टा, दक्षिणा श्रद्धा अनुसार। (**ब्राह्मण कई बार बाहर निकलते ही हाँडी फेंक देते हैं इसलिए हाँडी की जगह गिलास देने को लिखा है।**)

शय्यादान के लिए सामान

इसके बाद शय्यादान। इसमें सब सामान नया दिया जाता है।

1. पलंग, रजाई, गद्दा, चादर, तकिया।
2. थाली, लोटा, भगौनी, गिलास, कटोरी, चम्मच, बाल्टी।
3. छतरी, छड़ी, जनेऊ, चप्पल या खड़ाऊँ, टार्च।
4. शीशा, कंघा, तेल, माला, चंदन।
5. आसन कुशा का, रामायण या गीता।

6. पाँच कपड़े।
7. खाना, मिठाई।
8. अन्नदान, गऊदान (जितनी इच्छा हो)।
9. अगर मृतक सुहागिन स्त्री है, तो सुहाग पिटारी जिसमें चूड़ी, बिन्दी, मेंहदी, बिछिया, कलावा तथा लौंग या नथ।

जो पंडित सब कार्य कराये उसे ही यह दान देना चाहिए।

भले-बुरे की रस्म

यदि मृतक की स्त्री जीवित है, तो शय्यादान के बाद नहा ले। पीहर की तरफ से आयी दो धोती, दो ब्लाउज आदि सिर पर ओढ़ाये और **'आगे'** के रुपये दे। इसे **भले-बुरे की रस्म** कहते हैं। बेटों के ससुराल वाले और अन्य सम्बन्धी भी 'आगे' के रुपये देते हैं। बेटों के ससुराल से स्त्री के कपड़े व क्रिया करने वाले को जोड़ा दिया जाता है। घर के लोग कड़ुआ ग्रास करके भोजन करते हैं।

पगड़ी बाँधना

क्रिया करने वाले की हजामत (शेव) कराके उसे नये वस्त्र पहनाये जाते हैं। चौक पूरकर उसे एक पट्टे पर बैठाते हैं। एक घड़ा या कलश पानी भरकर (जेघड़) रखा जाये और अगर मृतक पुरुष हो तो पुरुष के पाँच कपड़े और यदि मृतक स्त्री है तो स्त्री के पाँच कपड़े, कुछ रुपये और पत्तल में लड्डू रखकर संकल्प किया जाता है। यह सामान सवासनी को दिया जाता है।

इसके बाद क्रिया करने वाले के पगड़ी बाँधी जाती है। सबसे पहले बहन या बुआ के यहाँ से आई पगड़ी पहनाई जाती है। फिर ससुराल से आया जोड़ा व तिलक दिया जाये फिर नाना-मामा के यहाँ से आया जोड़ा व पगड़ी दी जाये। सबसे पहले बहन व बुआ तिलक करती हैं, फिर सब नातेदार। तिलक में दिये जाने वाले रुपये दस, बीस या पचास हो सकते हैं,

पर ग्यारह, इक्कीस व इक्यावन नहीं। औरत के मरने पर केवल बुआ ही तिलक करती है बाकी सम्बन्धी नहीं। सभी उपस्थित जन मंदिर जाकर भगवान के दर्शन करते हैं। लौटते वक्त हरी तरकारी या पालक लाते हैं।

स्त्री द्वारा आँट खोलना

बहुएँ सिर धोकर सिंदूर, बिन्दी, काजल लगाती हैं, गोटा लगा कोई कपड़ा पहन लेती हैं। कुटुम्ब की सभी स्त्रियाँ सम्मिलित होकर हरी तरकारी-साग छोंक कर बहुएँ 4-4 पराठे बनाती हैं। आज से तवे पर पराठे सेंकने की आँट खुल जाती है।

सब कार्य हो जाने के बाद मृतक की स्त्री गंगा-स्नान को जाती है। बुरे-भले की जो धोती पीहर से आई थी, उसी को पहनकर स्त्री जाती है; वह धोती नहाकर वहीं छोड़ आती है। पीहर से आई हुई दूसरी धोती, ब्लाउज आदि पहनकर लौटती है। घर आकर आँट खोलने की रस्म की जाती है।

पहले मासिक श्राद्ध के बाद, मृतक की पत्नी पीहर एक थैली में लड्डू रखकर ले जाती है। वहाँ पर रुककर पुनः अपने घर लौट आती है। पीहर वाले 1 थैली में लड्डू भरकर, 2 धोती, ब्लाउज, हाथ की चूड़ी (सोने या चाँदी की) देते हैं। घर लौटकर कोथली खोलकर 2-4 घरों में लड्डू बाँट दिये जाते हैं। इसके बाद ही परिवार में कोई शुभ कार्य हो सकता है।

पुरुष की मृत्यु होने पर घरवाले मृत्यु के पश्चात् मृतक के सम्मान में पहला त्योहार नहीं मनाते व पहला वत वाला (बायने काढ़ने वाला) त्योहार नहीं मनाते। स्त्री की मृत्यु होने पर ऐसा कोई विचार नहीं है।

साल भर तक मृतक के निम्न सोलह श्राद्ध किये जाते हैं—(1) पन्द्रह दिन का (2) एक महीने का (3) डेढ़ महीने का (4) दो महीने का (5) ढाई महीने का (6) तीन महीने का (7) चार महीने का (8) पांच महीने का (9) छह महीने का (10) सात महीने का (11) आठ महीने का (12)

नौ महीने का (13) दस महीने का (14) ग्यारह महीने का (15) साढ़े ग्यारह महीने का (16) बारह महीने का। (**आजकल पन्द्रह दिन के श्राद्ध पर सूखा सीधा दिया जाता है, इसके बाद हर महीने ब्राह्मण जिमाते हैं। डेढ़ महीना, ढाई महीना व साढ़े ग्यारह महीने वाला श्राद्ध आजकल लोग नहीं करते**)। श्राद्ध में ब्राह्मणों को भोजन के बाद दक्षिणा देना आवश्यक है। श्राद्ध के दिन भूखे आगन्तुक को भोजन अवश्य देना चाहिए, लौटाना नहीं चाहिए। भोजन कराते समय जाति-पाँति का विचार नहीं करना चाहिये, क्योंकि सभी प्राणियों में आत्मा है; हमें तो उसी की तृप्ति करनी है। इसका यह मतलब न निकालें कि ब्राह्मण की जगह शूद्र को श्राद्ध में निमंत्रित कर खिलाया जाये; पर यदि श्राद्ध के दिन भूखा शूद्र भी आ जाये, तो उसे भी भोजन कराना चाहिये।

बरसी

मृतक-पुरुष की बरसी साढ़े ग्यारह महीने पर की जाती है और स्त्री की ग्यारह महीने पर। कुछ पुरुष की बरसी बारह मास की व स्त्री की बरसी साढ़े ग्यारह मास की करते हैं। बरसी पर प्रातः हवन करके ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है।

बरसी पर सामान

पुरुष की बरसी हो, तो पहनने के पाँच कपड़े, ओढ़ने-बिछाने के लिए गद्दा, रजाई, चादर, चदरा, तकिया, गिलाफ, पलंग (खाट), खड़ाऊँ या जूता, छाता, छड़ी, मंजन, साबुन, अंगोछा, माला, तेल कंघा, शीशा, आदि बरसी कराने वाले पंडित या पुरोहित को शय्यादान में देना चाहिए। इसके अतिरिक्त थाली, लोटा, गिलास, कटोरी आदि पाँच बरतन भी दिये जाते हैं। अँगूठी या अन्य गहने भी हो सके, तो वह भी दें। सालभर के लिए खाने का अनाज, दाल, घी इत्यादि भी दिया जाता है या उसके निमित्त रुपये भी दिये जाते हैं। मृतक-स्त्री की बरसी पर स्त्री के वस्त्र व उपरोक्त

अन्य सब सामान होता है। जिस ब्राह्मणी ने श्राद्ध में खाना खाया हो उसी को शैय्यादान का सारा सामान दिया जाता है। कम से कम बारह ब्राह्मणों को भोजन करावें, ब्राह्मणों को दक्षिणा भी दी जाती है। अपने रिश्तेदारों व अन्य व्यक्तियों को भी प्रसादस्वरूप भोजन पाने के लिए बुलाते हैं। प्रत्येक वर्ष मृतक की तिथि पर तथा कनागत में उसी तिथि को श्राद्ध व ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है। गया जी या बद्रीनाथ जी में श्राद्ध व पिण्डदान कर देने के बाद हर वर्ष तिथि पर व कनागत में श्राद्ध करना आवश्यक नहीं होता। **(लोकप्रथा है कि मृतक का गया में श्राद्ध कर देने के बाद पितरों की मुक्ति हो जाती है और इसके बाद श्राद्ध नहीं करने चाहिए। ऐसा कहा जाता है, पर यदि कोई पुत्र फिर भी श्राद्ध करे, तो उसका फल श्राद्धकर्ता को धर्मरूप में मिलेगा।)** ●●●

With Best Compliments from :-

BHARGAVA FINANCE & LEASING CO.

NDP CHITS PVT. LTD.

SBJ CHITS PVT. LTD.

Directors : Kuldeep Bhargava

Director : Anuj Bhargava

Mobile : 9810182101, 7838382101

E-mail: bhargavafinlease@yahoo.co.in

404-405, Amber Tower, Azadpur,

Near Aakash Cinema, Delhi-110033

With Best Compliments From :

Late Shri J.N. Bhargava (M.A.)

Founder

JOLLY ENGINEERING WORKS

Manufacturers of :

QUALITY HINGES & HARDWARE GOODS

1/3, ROOP NAGAR, DELHI-110007

Phones : Factory cum Office : 23911688

Fax : 23916512

Resi. : 23950878, 23916807

e-mail : jollyenggworks@usa.net

With Best Compliments from :

Anil Bhargava : 9810024116
Rajat Bhargava : 9873434821

Deals in :

Paper • Paper Board • Kraft Paper
• Waste Paper • Polyster Film
• ITC Make Paper Board
• Sakata Make Offset Inks
• Management Consultancy

PRINCIPALS :

- Siddharth Papers Pvt. Ltd.
- Siddheshwari Paper Udyog Pvt. Ltd.
- N S Papers Ltd
- Polyplex Corporation Ltd.
- Sakata Inx (India) Pvt. Ltd.
- Anand Duplex Ltd.

ABBA CONSULTANTS PVT. LTD.

107, Siddhartha Chambers, 55-A,
Kalu Sarai, Hauz Khas, New Delhi-110016
Email Id: *anilbhargava@gmail.com,*
rajat14@gmail.com

Mahindra
GENUINE SPARES

शान से बेचो ● सुकून से खरीदो

Authorised Distributor

BHARGAVA MOTORS

**2597/1, 1st Floor, Ram Singh Motor Market, Hamilton Road,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Kashmere Gate : 011-23968091, 23935259, 9560697255
Noida : 0120-4299498, 9650697233
Gurgaon : 0124-4387258, 9560697232**

With best compliments from

SMT.TRIVENI DEVI BHARGAVA DHARMARTH TRUST

Regd. Office :

Flat No. C-103, Bhrigu Appt., Plot No. 4, Sector-9,
Dwarka Phase-1, New Delhi-110075

Phone : 32930553 Mobile: 9871292072

Fax : 91-11-25920193
Mobile : 9810363235
E-mail : abcapd@live.com

25120193 (O)
25130548 (R)

Ashok Bhargava

August Pharmaceuticals (Delhi)

PHARMACEUTICALS RAW-MATERIALS &
EXCIPIENTS INDENTOR & SUPPLIER

WZ-414, NANAKPURA, HARI NAGAR,
NEW DELHI-110064

RES. : C-2A, MIG FLATS, MAYAPURI, DELHI-110064

In Memory of Our Father

SHRI GYAN BHARGAVA

MADHUR & COMPANY

Authorised Distributors :

Reid & Taylor

425-426, Ist Floor, Katra Choban,
Chandni Chowk, Delhi-110006
Phones : 23269173, 23257543
Resi. : 26947140, 26944932

Prop. Madhur Bhargava

ARYAN CLASSES

INNOVATIVE LEARNING • PROVEN RESULTS

A HIGHLY SPECIALISED PREPARATORY INSTITUTE

FOR IIT-JEE, DTU, BITS & NTSE

Our students achieved highest success percentage
in IIT JEE, BIT SAT, AIEEE for the last five years

PROGRAMME SCHEDULE

For VIII, IX, X, XI and XII students (1 / 2 / 3 / 4 Year Programme)

Special Courses for weak and average students and for genius also.

Special Classes for Board and school sylabus

For Admission cum Scholarship Test Contact : **9711086251**

ARYAN CLASSES, Mahesh Bhargav

500/7, Lane No.5, Vishwas Nagar, Delhi 110032 Tel: 011-22387553, 22305075
Email: maheshbhargava97@rediffmail.com, harishkharbanda@rediffmail.com
Visit us at www.aryanclassesonline.com and follow us on

With Best Compliments From

SURESH BHARGAVA

PLOTS

AGRA, FARIDABAD, JAIPUR, ROHTAK, MOHALI

FLATS

FARIDABAD, CHANDIGARH, KARNAL, BHIWARI

KANU ESTATES (PVT.) LTD.

G-24, SIDDHARTHA ENCLAVE, NEW DELHI-110014

Ph. : 91-11-26344142, 26347664, 26342775, 26341413

Fax : 00-91-11-26346049

Website : sureshb@kannuestate.com

In Memory of

SHRI KRISHAN KUMAR — SMT. SARLA BHARGAVA
1924-2009 **1928-2005**

Raymond
SHOP

MOHAN LAL BHARGAVA & CO.
SINCE 1920

1845, FOUNTAIN, CHANDNI CHOWK
DELHI-110006

PHONE : 23269599 · FAX : 23254821

E-mail : mlb1845@gmail.com

In memory of

Shri Shankar Lal Bhargava

Raj Shree
ठंडाई पाउडर

SHAMBHU NATH SURESH KUMAR
DELHI-6

श्री
मिल्क मसाला
केसर पिस्ता, बादाम

SHAMBHU NATH SURESH KUMAR

DRY FRUITS, SPICES & DRIED FRUITS

SHANKAR LAL VED PRAKASH
SHANKAR LAL KAMAL CHAND

6701, KHARI BAOLI, DELHI-110006
Mobile : 9810105818, 9818521507, 9212111074

Suresh Bhargava

With best compliments from

PRAVIN PAPER PRODUCTS

Manufacturers of :
Cloth Lined Paper, Cloth Centred Paper,
File Covers, File Boards and All Types of Envelopes

28-A, Vidhan Sabha Marg,
Lucknow-226001
Phone : (0522) 2221375, 2223535, 2227733

Associates :

Pradeep Bhargava

P. KUMAR & CO.

40 Cantt Road Lucknow
Phone : (0522) 2221375

Pramod Bhargava / Prabhat Bhargava

PRAVIN PAPER INDUSTRIES

B-34, Site IV Industrial Area,
Sahibabad (Ghaziabad) U.P.
Phone : (95120) 2895476
Resi. : (95120) 2641357
Mobile : 9810644984

Head Office :
58, Chand Ganj Garden, Lucknow
Phone : (0522) 2374733

Rajender Nath Bhargava
Narender Bhargava *Gunjan Bhargava*

UMA UNIFORMS

Mfrs. of : All kinds of Uniforms

Specialists in :
School, Hospital, Staff, Workshop Uniforms

C-18, GALI NO. 3, VILLAGE KOTLA,
MAYUR VIHAR, PHASE-1, DELHI-110091
Ph. : 9868222734

With best compliments from Om Prakash Bhargava

BHARGAVA PLASTICS

Manufacturers of :
POLYTHLENE TUBES, BAGS & SHEETS

Sales Office
1/9804, West Gorakh Park, Gali No.1, Babarpur Road,
Opp Hanuman Mandir, Shahdara, Delhi-110032
Phone : 22824533

Factory
L-97, Sector-1, Udyog Vihar, Bawana Industrial Area
Bawana, Delhi-110039 • Phone : 27750458
Phone : 9312280965 Mobile : 9810447989

With Best Compliments from:

KISHORI LAL AGENCIES

Wholesale Paper and Board Merchants
Wiro, Spiro, Diary, Calendar,
Wedding Card and Boxes

❖ ❖ ❖

SUNDRAM CARDS

Specialists in:
Designer Wedding Cards

73, Chawri Bazar, Delhi-110006

Davender Bhargava *9312973134*
Arvind Bhargava *9810228863*
Pravin Bhargava *9810019290*

E-mail : kishorilal73@gmail.com
sundramcards@gmail.com

With best compliments from

Diwakar 9810003713
Sudhakar 9810042132
Kunal 9891091010
Rishabh 9990000225

BHARGAVA
COMMERCIAL PVT. LTD.
(WHOLESALE PAPER & BOARD MERCHANTS)
21/12, Darya Ganj, Dev Niwas, New Delhi-110 002
Ph.: 23269990, 23280556, 23254041 Fax : 91-11-23280557

♣ ♣ ♣

BHAI PAPERS PVT. LTD.
PAPER & WIRO IMPORTERS & INDENTORS

♣ ♣ ♣

BHAI SPIRAL SPICO (P) LTD.
C-93, D.D.A. SHEDS, OKHLA INDUSTRIAL AREA
PHASE-I, NEW DELHI-110020
PHONES : 26811616, 26813939

RESI. : 22151617, 22141617

With Best Compliments:
Mr. Suresh Bhargava and Mr. Arshad Usmani

ANANTHAM EPIC HOMES
(Builders & Developers)

Corporate Office:
'A' 511-512, "Bonanza", Sahar Plaza, Andheri Kurla Road, Andheri East, Mumbai 400059
Tel: 022 66916851/2/3 Mob: 8828115822 | E: md@aehomes.co.in | W: www.aehomes.co.in

Site Address:
Opp. Taki Mata Mandir, Near L & T Training Centre Off Mumbai Pune Highway,
Rees, Panvel Division - 410206
(Mumbai Metropolitan Region)

Tel. : 27465607, Mob. : 8828115812

BHARGAVA PHYTOLAB
SINCE 1920

A Leading Homoeopathic Company

BHARGAVA PHYTOLAB

Clinically proven for acute and chronic

Cervical Spondylitis

and

Cervical Spondylosis

Doctor's **Most Trusted** Brand for

Cervical Spondylosis

Available at all the nearest

Homoeopathy

& Allopathy stores

BUY ONLINE AT
www.doctorbhargava.com

SPONDIN®

Drops

India's No.1 Selling Brand for
NECK & SHOULDER PAIN

BHARGAVA PHYTOLAB PVT. LTD.

A Leading Homoeopathy Company

Help Line No.
99-1008-1920

GRACURE

- EU GMP cerification from Belgium's FAMHP
- Certified for tablets, capsules, liquid syrups, ointments and dry syrups
- Believes in "Quality On Time & In Full"

EU-GMP Certified Co.

Gracure Pharmaceuticals Ltd.
251-254, 2nd Floor, DLF Tower, Block-IV, 15, Shivaji Marg, New Delhi-110 015 (INDIA)
Phone : +91-11-47770900 Fax : +91-11-477709999
Email : info@gracure.com Website : www.gracure.com

Regd. No. DL©-01/1255/2018-2020
Date of Publishing 28-06-2020
Posted at New Delhi PSO, 28 & 29 Every Month
जून 2020 RNI No. 19737/70

श्री योगेश भार्गव स्वामी, सम्पादक, मुद्रक तथा प्रकाशक के प्रबन्ध से भृगु प्रिंटर्स, डी-6/29ए, दयालपुर, दिल्ली-94 में छपा एवं मानवधर्म भवन, 67/3 मद्रास हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित हुआ। दूरभाष : 9312243182